बीमारियों और दवाइयों का आश्चर्यलोक

इस वर्ष जनवरी में यूएस खाद्य व औषधि प्रशासन ने एक दवाई वायवेन्स को मंज़ूरी दी। यह दवा एम्फेटेमीन पर आधारित है। दवाई एक अजीबोगरीब बीमारी का इलाज करती है - खूब खाने की इच्छा का। बीमारी का नाम है बिंज ईटिंग डिसऑर्डर या बीईडी। मंज़ूरी मिलने के चार दिन बाद ही प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी मोनिका सेलेस *गुड मॉर्निंग अमेरिका* चैनल पर प्रकट हुईं और उन्होंने बताया कि कैसे वे अति-भक्षण रोग से जूझती रही हैं। इसके साथ ही अमेरिका के टेलीविज़न चैनल्स पर 'जन हित में जारी' घोषणाओं की बाढ़ आ गई जिनमें लोगों को अपने डॉक्टर से सलाह लेने का मशवरा दिया गया था। जल्दी ही यह पता चला कि मोनिका सेलेस वास्तव में कंपनी से पैसा लेकर ही प्रकट हुई थीं। वे वायवेन्स बनाने वाली कंपनी शाइर की सवैतनिक प्रवक्ता थीं।

फ्लेरिडा विश्वविद्यालय के शोधकर्ता जेफ्री लकासे का मत है कि शाइर कंपनी को अच्छे से पता था कि लोग डॉक्टर के पास जाएंगे तो दवा की बिक्री बढ़ेगी।

ऐसा अभियान पहली बार नहीं हुआ है। किसी बीमारी का प्रचार-प्रसार करके अपनी दवा की बिक्री को बढ़ाना कंपनियों की जांची-परखी रणनीति है। कंपनियां आपको यकीन दिलाती हैं कि आप भी उस तकलीफ से पीड़ित हैं। संभव है, कुछ लोगों को सचमुच वह तकलीफ हो, मगर अधिकांश लोगों के मन में शंका तो पैदा हो ही जाती है। शंका पैदा हुई तो अभियान सफल हो गया।

इसी प्रकार का एक उदाहरण है एडीएचडी - अटेंशन डेफिशिट हायपरएक्टिविटी रोग। यानी एकाग्रता का अभाव और अति-सक्रियता का रोग। साधारण भाषा में कहेंगे तो इसका मतलब होगा बच्चा ध्यान नहीं देता और धमाचौकड़ी करता है। इसे एक बीमारी का दर्जा दिलवाने के लिए सिबा गायगी ने 1991 से 1994 के दरम्यांन एक एडवोकेसी समूह - चिल्ड्रन एंड एडल्ट्स विद अटेंशन डेफिशिट हायपरएक्टिविटी डिसऑर्डर को वित्तीय सहायता दी थी। उस समय सिबा गायगी ने एक नई दवा रिटालिन बाज़ार में उतारी थी जो इसी 'रोग' के लिए थी। कंपनी ने उपरोक्त संगठन को 7 लाख 48 हज़ार डॉलर इस अभियान के लिए दिए थे। बात उजागर होने के बाद भी कंपनी ने 2014 में उक्त संगठन को 3.45 लाख डॉलर का अनुदान दिया था।

लगभग यही स्थिति एक अन्य समस्या - सामाजिक दुश्चिंता गड़बड़ी या सोशल एंक्ज़ाइटी डिसऑर्डर - के संदर्भ में भी सामने आई थी। 1999 में अमेरिका भर में बस स्टॉपों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर्स चस्पा हो गए जिनका संदेश था कि कहीं आपको लोगों से एलर्जी तो नहीं है। संदेश यह था कि आपको लोगों से मिलने-जुलने में कई बार जो असहजता महसूस होती है, उसे एक बीमारी के रूप में पेश किया जाए और स्मिथ-क्लाइन-बीकैम द्वारा बनाई गई दवा पैक्सिल हाज़िर कर दी जाए। ये पोस्टर्स एक संगठन सोशल एंक्ज़ाइटी डिसऑर्डर कोएलीशन द्वारा प्रसारित किए गए थे और स्मिथ-क्लाइन-बीकैम ने इन्हें प्रायोजित किया था।

लगभग इसी तरह की एक और स्थिति बायपोलर डिसऑर्डर की है। इसमें व्यक्ति का मिज़ाज बदलता रहता है (किसका नहीं बदलता)। तो इसके प्रचार-प्रसार का ज़िम्मा लिली नामक कंपनी ने उठाया था जिसकी दवा ज़ायप्रेक्सा बाज़ार में आई थी।

सबसे रोचक किस्सा तो बेचैन टांग गड़बड़ी (रेस्टलेस लेग्स सिंड्रोम) का है। इस बीमारी की इजाद ग्लेक्सो-स्मिथ-क्लाइन ने 2003 में की थी। कई लोगों को रात में टांगें हिलाने की आदत-सी होती है। इसे एक गंभीर रोग बताने का काम एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से शुरू हुआ था जिसमें *अमेरिकन एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी* में प्रस्तुत किए गए एक शोध का हवाला देते हुए बताया गया था कि हाल ही में खोजा गया रेस्टलेस लेग सिंड्रोम पूरे अमेरिका को रात-रात भर जगाकर रखता है। इसके बाद तो मीडिया में इस सिंड्रोम के खूब चर्चे चले। इनमें से अधिकांश में पाठकों

को सलाह दी जाती थी कि वे रेस्टलेस लेग सिंड्रोम फाउंडेशन से संपर्क करें। इस फाउंडेशन को ग्लेक्सो-स्मिथ-क्लाइन से वित्तीय अनुदान मिलता था।

यह सही है कि इस तरह के जागरूकता अभियानों से कुछ लोगों को ज़रूर मदद मिलती है। हो सकता है कि वे जिस चीज़ को मामूली समझ रहे हों, वह दरअसल किसी गंभीर बीमारी का शुरुआती लक्षण हो। मगर दवा कंपनियां ऐसे अभियान 'जनहित' में नहीं बल्कि 'आत्महित' में चलाती हैं। यह बात बार-बार प्रमाणित हुई है कि दवा कंपनियां अपनी दवाइयों को बेचने के लिए तमाम हथकंडे अपनाती हैं। ऐसे में आम लोगों के लिए यह जानना मुश्किल हो जाता है कि किस अभियान पर विश्वास किया जाए। हमारे यहां भी हाथ धुलाई का अभियान काफी हद तक युनीलीवर द्वारा प्रायोजित था जो लाइफबॉय साबुन बनाती है। ***(स्रोत फीचर्स)***

इस अंक के चित्र निम्नलिखित स्थानों से लिए गए हैं -

page 02 - http://cdn.theatlantic.com/static/infocus/shuttle070111/s_s61_7e036716.jpg
page 05 - http://jwa.org/sites/jwa.org/files/mediaobjects/elisabeth-bing-218x300.jpg
page 05 - http://www.nytimes.com/2015/05/17/health/elisabeth-bing-mother-of-lamaze-dies-at-100.html?_r=0
page 07 - https://www.skepticalscience.com/Industrial-Revolution-global-warming.htm
page 13 - http://www.biodiversityexplorer.org/mammals/carnivora/images/2084157738_658w.jpg
page 15 - http://www.rufford.org/files/SM_Ameiva%20vittata%20a%20species%20not%20seen%20since%201902.JPG
page 17 - http://www.coastaldigest.com/images/stories/pictures/Sep2012/Oct25/car_crash.jpg
page 19 - http://4.bp.blogspot.com/-KLtAJIzTWTs/U5YXOmgVgjI/AAAAAAAAB9Q/52u3zeYaODM/s1600/18.JPG
page 21 - https://love2careskin.files.wordpress.com/2015/08/fizzy-drink-tax.jpg
page 25 - http://www-tc.pbs.org/independentlens/blog/wp-content/uploads/2013/01/melting-glacier-polar-bears.png
page 30 - http://www.kiitbiotech.ac.in/jbs-haldane/images/jbs-haldane.jpg
page 34 - http://eightsummits.com//wp-content/uploads/2013/01/Conga-Line-2012-1.jpeg
page 37 - http://cdn.phys.org/newman/gfx/news/hires/2014/armywormsdev.jpg
page 37 - http://i.imgur.com/u0pdx.jpg